ISBN: 978-93-84312-25-1

© सुरक्षित डॉ. शिवपाल सिंह

मुद्रक एवं प्रकाशक
उत्कर्ष प्रकाशन
142, शाक्य पुरी, कंकरखेड़ा,
मेरठ कैन्ट-250001 (उ0प्र0)
लोहिया गली-4, बाबरपुर, शाहदरा, दिल्ली-94
फोनः 0121-2632902, 09897713037

प्रथम संस्करण : 2016

सम्पादक
डॉ. शिवपाल सिंह, प्राचार्य
राकेश कुमार केशरी, प्रवक्ता
दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, एन.एच.-58, परतापुर बाईपास, मेरठ।
फोनः 983792892, 7055562224

Scanned by CamScanner

29.

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता एवं विद्यालय, परिवार तथा समाज की भूमिका

❖ डॉ. आभा सिंह, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति की पहचान है, सम्पूर्ण विश्व में भारत को अलग पहचान देते है। किन्तु बेहद अफसोस होता है यह देखकर की आज हम अपनी यह पहचान खोते जा रहे है। हम देखते हैं कि मूल्यों के ह्रास होने से समाज में हर प्रकार के अपराध बढ़ रहे है। हम यह भी देख रहे हैं कि मूल्य विहिन समाज में असंतोष फेल रहा है। बेकारी के बढ़ने से युवक असंतोष जैसी कई प्रकार की चुनौतियाँ खड़ी दिखाई देती है। छोटे से बड़े नौकरशाह निकम्मेपन और भ्रष्टाचार के अंधकूप में डुबकियाँ लगा रहे है। सभी विचारवान लोग आज समाज में व्याप्त विकृतियों के लिए मूल्यों के ह्रास को उत्तरदायी मानते हैं। हिंसा की बढ़ती प्रवृत्ति, सामाजिक विघटन, असहिष्णुता, ऊंच-नीच का भाव, भ्रष्टाचार, स्वार्थलिप्सा जैसी प्रवृत्तियाँ मूल्यों के क्षरण का ही प्रतिफल है। आज समाज में सामान्य आदमी की यह धारणा हैं कि मेहनतकश एवं ईमानदार व्यक्ति पीस रहे है और झूठ एवं फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं ईमानदार व्यक्ति को मूर्ख माना जाता है। युवाओं का रूष्ट और रूखा व्यवहार, बड़ों के प्रति अनादर, कुर्तक, मनमानी, घुमपान, शराब कम समय में सब कुछ पाने की लालसा में शार्टकट अपनाना ये सब दर्शा रहे है कि युवा किस हद तक नैतिकता से गिर रहे है। इस धारणा ने शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासनहींनता, श्रम के प्रति अनावस्था, स्वकर्त्तव्य के प्रति उदासीनता, अनुत्तरदायित्व आदि को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उक्त स्थिति ने आज मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता को अनुभूत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सभी प्रकार के विचारशील लोग शिक्षा की प्रक्रिया का पुनः अभिविन्यास करने के पक्ष में दिखाई पड़ रहे है। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो युवको को इस बात की अनुभूति कराये कि इस प्रकार न तो शोषण, असुरक्षा तथा हिंसा को रोका जा सकता है और न ही किसी समाज को यह व्यवहार स्वीकार्य होगा। मानव जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। मूल्य मनुष्य के व्यवहार तथा आदर्श का प्रतिरूप है। मूल्य ही मनुष्य को सृष्टि का विशिष्ट एवं सभ्य प्राणी बनाते है। मूल्यों द्वारा ही स्वस्थ सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण करते है। मूल्यों के अभाव में व्यक्ति एवं समाज के समक्ष अनेक संकट उत्पन्न हो जाते हैं। आदर्शवादियों के अनुसार मानव के सम्पूर्ण विकास

Scanned by CamScanner